IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शास्त्रीय संगीत एवं कलाओं के संवर्धन में सोशल मीडिया

मार्गदर्षक
प्रो. स्मिता सहस्रबुद्धे
(कुलपति)
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं
कला विष्वविद्यालय ग्वालियर
शोधार्थी अनिकेत तारलेकर
जीवाजी विष्वविद्यालय ग्वालियर

आज के इस आधुनिक युग में जीवन का कोई भी पहलू अछूता नहीं रह गया है। आज के युग में मध्यम वर्ग के हर शिक्षित व्यक्ति के पास स्मार्ट फोन है, तथा स्मार्ट फोन उपयोग करने वाले अधिकांश लोग, फेसबुक, इंस्टाग्राम, टिवटर, वाट्सप आदि सोशल मीडिया माध्यमों पर सक्रिय है। इसलिये जीवन के अन्य सभी पहलुओं के भांति शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भी सोशल मीडिया ने अपना प्रभाव छोड़ा है।

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में सोशल मीडिया का नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों ही प्रकार का योगदान दृष्टिगोचर होता है। अब हम इन्ही दोनों पक्षो पर विचार करेंगे।

संगीत के क्षेत्र में सोशल मीडिया का सकारात्मक योगदान–

संगीत के क्षेत्र में सोशल मीडिया का योगदान निःसंदेह काफी हद तक सकारात्मक रहा है। इसमें सबसे पहला बिन्दु सुलभ उपलब्धता है। अर्थात आज से कुछ दशक पहले तक बड़े घरानेदार एवं स्थापित कलाकारों की ध्वनि मुद्रीकाये अत्यंत दुर्लभ थी। देशभर में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में जा पाना हर व्यक्ति के लिये संभव नही था। केवल कुछ विशेष विक्रेताओं के पास अथवा किसी जुनूनी संकलन कर्ता के पास ये दुर्लभ ध्वनि मुद्रिकायें सुनने को मिल पाती थी। परन्तु वर्तमान समय में यूट्यूब जैसे माध्यमों ने प्रतिष्ठित कलाकारों को सुन पाना अत्यंत सुलभ कर दिया है। कुछ क्षणों में सर्च (मंतबी) करके देश के किसी भी प्रतिष्ठित कलाकार को सुना जा सकता है। इतना ही नही देश–विदेश में होने वाले लगभग सभी प्रतिष्ठित संगीत समारोहो का जीवन संगीत प्रसारण (स्पअम ैजतमंउपदह) तथा रिकॉर्डिंग इन सोशल मीडिया माध्यमों पर उपलब्ध होती है। अतः हम निश्चित रूप से कह सकते है कि आज से लगभग दो तीन दशक पहले एक संगीत के विद्यार्थी एवं साधकों के लिये प्रतिष्ठित कलाकारों की विभिन्न शैलियों को सुन पाना ही मुश्किल था किन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थियों एवं साधकों के लिये बड़े एवं प्रतिष्ठित कलाकारों की प्रस्तुतियों को देखना अत्यन्त सुलभ हो गया है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि केवल सोशल मीडिया को सुनकर संगीत की बारिकियों को आत्मसाद करना व्यक्ति की निजी क्षमता एवं समझ पर निर्भर करता है।

प्रचार–प्रसारः–

सोशल मीडिया ने निश्चित रूप से संगीतकारों तथा वृहद् रूप से संगीत के प्रचार प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज से दो तीन दशक पूर्व तक संगीत क्षेत्र का दायरा बहुत सिमटा हुआ था तथा केवल कुछ घरानेदार तथा ख्याति प्राप्त संगीतकारों तक सीमित था। संगीत रसिक भी इन्हीं को सुनना पसंद करते थे तथा कार्यक्रम भी इन्हीं लोगों को प्राप्त होते थे। किसी प्रतिभा सम्पन्न नये कलाकार के लिये उन दिनों अपनी पहचान बना पाना अत्यंत कठिन था। परन्तु वर्तमान काल में सोशल मीडिया ने इस परिदृश्य को पूर्ण रूप से बदल दिया है। अब कोई भी संगीत विद्यार्थी अथवा साधक अपनी रिकॉर्डिंग विभिन्न सोशल मीडिया माध्यमों पर चुटकीयों में अपलोड कर सकता है। परन्तु इसके बाद इसे प्राप्त होने वाली लोकप्रियता अथवा भविष्य हेतु अवसर उसकी अपनी प्रतिभा तथा काबिलियत पर निर्भर करती है। वृहदस्तर पर संगीत के प्रचार प्रसार में भी सोशल मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अब देश विदेश में होने वाले किसी भी सांगीतिक कार्यक्रम की अग्रिम सूचनाये तथा प्रसारण (स्पअम ैजतमंउपदह) अथवा रिकॉर्डिंग हेतु ऑनलाइन लिंक देखते ही देखते दुनियाभर के संगीत रसिको के लिए प्रसारित हो जाती है। जिससे अधिक से अधिक संगीत रसिक ऐसे कार्यक्रमों का अधिक से अधिक लाभ ले पाते है।

संगीत शिक्षण के क्षेत्र में योगदान–

वर्तमान युग में बहुत से संगीतज्ञ संगीत शिक्षण के वदसपदम माध्यम को अपना रहे है। ऐसे कलाकार तथा विद्यार्थी जो मोबाइल, टेब तथा लेपटॉप आदि की प्रगत तकनीकी सुविधाओं का लाभ लेने में निष्णार्थ है। वे गूगलमीट, जूम, स्काइप, वेबीनार आदि माध्यमों का उपयोग करके ऑनलाइन सत्र आयोजित कर संगीत सीखने एवं सिखाने की दिशा में आगे बढ़ रहे है। प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी निश्चित रूप से ऐसे ऑनलाइन सत्रों का लाभ लेकर अपनी सांगीतिक कुशलता तथा ज्ञान में वृद्धि कर सकते है। इतना ही नही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की अनेक सांगीतिक कार्यशालाओं संगोष्ठियाँ तथा सेमिनार आदि में भाग लेना अपने शोध पत्र प्रस्तुत करना तथा ऐसे आयोजनों का लाभ लेना ऑनलाइन माध्यमों की सहायता से अत्यंत सरल एवं सुलभ हो गया है।

संगीत हेतु समर्पित सोशल मीडिया चैनल तथा समूह (ळतवनच)–

वर्तमान काल में अनेक कलाकारों द्वारा संगीत साधकों तथा संगीत रसिकों ने सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर शास्त्रीय संगीत हेतु समर्पित चैनल्स तथा ग्रुप आदि प्रारंभ किये है। जिनमें से कुछ अत्यंत लोकप्रिय तथा ज्ञानवर्धक है तथा संगीत संबंधित विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श का महत्वपूर्ण कार्य नियमित रूप से संचालित किया जा रहा है। जिसका लाभ निश्चित रूप से इच्छुक एवं प्रतिभा संम्पन्न विद्यार्थीयों तथा संगीत साधकों को मिलता है।

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव–

संगीत के क्षेत्र में सोशल मीडिया ने जहाँ सकारात्मक योगदान दिया है वही इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी है। अब हम इन्हीं पर विचार करेंगे।

स्थिरता एवं गांभिर्यता का अभाव–

शास्त्रीय संगीत का अभ्यास करने वाले विद्यार्थियों हेतु चित्त की स्थिरता एवं प्रयास में गांर्भिय अत्यंत आवश्यक गुण है। इसके विपरीत सोशल मीडिया की मूल वृत्ति ही चंचलता एवं आपाधापी से युक्त है। सोशल मीडिया ने रसिकों तक संगीत की पहुँच को सुलभ तो बना दिया है। किन्तु सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले अधिकांश लोग किसी भी रिल, विडियो तथा ऑडियो क्लिप को एक डेढ़ मिनिट से अधिक नहीं सुनते। यह शास्त्रीय संगीत के मूल प्रवृत्ति के सर्वथा विपरीत है। शास्त्रीय संगीत को आत्मसात करने के लिए पूर्ण स्थिरता एवं गांभीर्ययता के साथ जब किसी कलाकार की पूर्ण प्रस्तुति को सुना जाता है तभी उसका कुछ सकारात्मक लाभ सुनने वाले को प्राप्त होने की संभावना है।

एकाग्रता एवं समर्पण का अभावः–

सोशल मीडिया पर शास्त्रीय संगीत सुनने वाले अधिकांश लोग कानों में इयर फोन लगाकर संगीत सुनते रहते है तथा उसी समय पर साथ ही साथ अन्य कार्यों में भी संलग्न रहते है। ऐसे परिस्थिति में शास्त्रीय संगीत हेतु आवश्यक चित्त की एकाग्रता का सर्वथा अभाव रहता है। किन्तु इससे ज्ञान अथवा गुण संवर्धन के क्षेत्र में कोई सकारात्मक लाभ प्राप्त नहीं होता। कमोवेश यही स्थिति संगीत की ऑनलाईन कक्षा में भी होती है। जहाँ न तो विद्यार्थी सम्पूर्ण समर्पण के साथ कक्षा में सिखाई गई बातों पर ध्यान दे पाता है ना ही सिखाने वाले शिक्षक व कलाकारों के मन में सिखाने वालों के संगीतिक उत्थान हेतु कोई तड़प होती है। कुछ कलाकार तथा गुरु निश्चित रूप से ऑनलाइन कक्षाओं में भी शिष्यों को सिखाने हेतु गम्भीर प्रयास करते है, किन्तु अधिकांश मामलों में ऐसे ऑनलाईन सत्रों का उद्देश्य व्यवसायिक होता है।

गुरू एवं शिष्य के बीच परस्पर अंतर संबंध एवं जुड़ाव का अभाव है–

जब कोई शिष्य गुरु के सामने नियमित रूप से वर्षों तक बैठकर सीना बसीना तालिम हासिल करता है तो स्वभाविक रूप से शिष्य के मन में गुरु के प्रति आदर भाव तथा संपूर्ण समर्पण उत्पन्न हो जाता है तथा गुरु के मन में भी शिष्य के प्रति पुत्रवत् आत्मीयता का भाव तथा अच्छा सीखने एवं शिष्य को योग्य बनाने की तड़प रहती है। ऑनलाइन माध्यम में इस तरह के अंतरसंबंध विकसित होना कठिन है।

अतः अंत में हम कह सकते है कि शास्त्रीय संगीत के सर्वधन में सोशल मीडिया का योगदान तो है परन्तु इसकी कुछ सीमाएं है। यदि विद्यार्थी एवं संगीत साधक इसकी खामियों एवं नकारात्मक पहलुओं को दूर करने का प्रयत्न करे तो निश्चित रूप से शास्त्रीय संगीत में एवं कलाओं के संवर्धन मे सोशल मीडिया महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।